

આ
ત્માન
દ

પ્રકાશક

: પ્રકાશક :

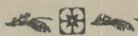
શ્રી લેન આત્માનંદ સભા
ભાવનગર

પૃષ્ઠા : ૬૩

અંશ : ૪

મહા : વીર સ. ૨૪૮૮ : આત્મ સ. ૬૬ : વ. સ. ૨૦૨૨

અ નુ ક મ ણ્ણ કા



ક્રમ	લેખ	લેખક	પૃષ્ઠ
૧	જિનવાણી		૫૭
૨	તજવાની શક્તિ		૫૮
૩	મધુ તિષ્ઠતિ જિડ્વાગ્રે	અવેરભાઈ બી. શેઠ	૬૦
૪	પાપ અને પાપી	મનસુખવાલ તા. મહેતા	૬૩
૫	શુવનનો હિસાબ	પૂરો ડેદારનાથાળ	૬૬
૬	નૈન સમાચાર		૬૬

સ્વર્ગવાસ નોંધ

લાલા હિરાવાલ માણેકયંદળ તા. ૮-૧૨-૧૯૬૬ પના રોજ સ્વર્ગવારી થયા છે. તે મણે આ સભા શોક પ્રદર્શિત કરેલે. સ્વર્ગસ્થ શેઠ આ સભાના આજુનન સભાસદ હતા. તેમના સ્વર્ગવાસથી તેમના કુટુંભીજનો પર આવી પહેલી આપનિ પ્રયે એ સભા દિલ્લિસોઝ દર્શાવે છે. તેમના આત્માને શાસનહેલ પરમ શાંતિ આપે એવી અમે પ્રાર્થના કર્યેલે છે.



નામ : "Jahangir"

દેશ : મીલ : ૪૨૮૦
અંગલા : ૪૩૨૮

ધી ન્યુ જહાંગિર વકીલ મીલસ કું. લી.

મેનેજર એજન્ટસ

પોસ્ટ ઓફિસ નં. ૨

મંગળદાસ લેસીંગભાઈ સંસ પ્રા. લી.

ભાવનગર



वर्ष : ६३]

इन्द्रियार्थी १८६६

[अंक : ४

जि न वा ए॥

मूलाओ खंधपभवो दृमस्स
 सांघउ पच्छा समुवेन्ति साहा ।
 साहा—पयाहा विरुहन्ति पत्ता
 तओ सि पुण्फं च कलं रसो अ ॥

वृक्षना मूणमांथी थड उगे छि, थडमांथी
 पछी जुटीगुही शाखाओ उगे छि, ए शाखा-
 एमांथी बीज नानी नानी डायो। इटे छि, ए
 अणो उपर पांडां उगे छि, पछी तेने कूब
 आवे छि, इण लागे छि अने त्यारबाट ते
 इणोमां रस जामे छि.

एवं धर्मस्स विणओ
 मूलं परमो से योक्षेः ।
 जेण किंति सुयं मिम्बं
 निस्सेसं चाभिगच्छइ ॥

ए ज प्रकारे धर्म॑३५ वृक्षषुं मूणा विनय
 छे अने भोक्ष ते मूणमांथी प्रगट थते।
 उत्तमोत्तम रस छि, विनयथी ज मनुष्य झीर्ति,
 विद्या, शिलाधार-प्रशंसा अने कृत्याणुमंगणने
 शीघ्र भेजवे छि.

('महानार-वाणी' : ग्राथा ७२-७३.)

ત ७९ वानी शक्ति

संपत्ति मेणवानी शक्ति करता भोटी शक्ति संपत्ति तज्ज्वानी हे. मेणवी तो धणु शडे हे, पण तच शडे हे कांधिक. पण तज्ज्वा तज्ज्वामां धणु इरे हे. डेटलांड आपे हे, कारणुके पोतानी नामना थाय भाटे. आवी रीते आपनाराचो निर्मात्य हे. डेटलां आपे हे, न आपे तो शुं करे भाटे. सर-कारथी इरीने पण डेटलांड आपे हे. अशक्त थवानी भरणुनो लय पाभाने डेटलांड आपे हे. कांधिक गतागम न होवाथी डेवण शन्य भन्तक थहरने आपे हे. ए शा भाटे आपे हे अनु गेमते भानज हेतु नथी. आ वेटा वृत्ति ए कांध तज्ज्वानी शक्ति नथी. आ थवा ज तज्ज्वानाराचो, आपनाराचो लवे हेघीती रीते कांधने कांध दान धर्म झी रखा होय अम लागे पण अरी रीते ए कांधिज करी रखा नथी.

आ विचार सरथी अनुहार पण वागे पण सगजवानुं आ हे क, छेवट भाषुस ने कांध करे हे ते लवे हुनियानी समक्ष मेहुं थहरने उभुं रहे, ने एने पण मेहो ला अनवे, पण अणु ए कुरुं हे ते भराबर हे क नहिं एनी आधार रिला अनुं भन हे. अनुं धन नहिं. एना भननी लावना हे. एना भने जे रीते, ने जे भाटे, ने जे दृष्टि अंहुये कुरुं हे ए भडत्वनुं हे. अहार लवे गमे ते हेघाय. पण व्यक्तिना पोताना विकासमां भडत्वनी वस्तु अनुं भन हे. एना भनना तरजो, विचारो, डल्पनाचो, लावो, लावनाचो ए अदृश्य ज्ञानी वधी ज सुषित किंभतीभां किंभती हे. ने अहारनी एनी हेघाय साष्टि ए निर्मात्यमां निर्मात्य हे आ रीते जेतां नित्य श्रवननी पणभणनी शुद्धि भाटे ज भाषुस अंतर प्रयत्न कांध दिवस करतो नथी. ने एक दिवस लाखुं दान करीने नाम कमाई लेवाने भोड रापे हे ए भाषुसना जेवे

निर्मात्य अने निष्ठूण भीजे कांध नथी. एनां करतां जे पोताना टांचा सावतोभांथी दमेशा कांधने कांध रीते भीजने उपयोगी थवानो कांधक पण प्रयत्न करतो होय हे, ए भाषुस उतम हे. दमेशा ए विष जगृत पण होय हे. एवा भाषुसे भर-चेली लाख पाई, ए पेला भाषुसना पचास डोउ इधियाना दान कांध वधारे किंभती हे, वधारे संस्कारी पण हे. अने वधारे समाज डल्पाणुकारक हे.

अणुधड असंस्कारी भाषुस दान हेवा नीक्के एना केवुं समाजनी अर्धोगतिनुं भीजुं कांध ज पगलुं नथी. एनां करतां ए दान न हे ने एना पैसा वेड्हाई जय के हग लेडा इती जय, ते वधारे सां. कारणु के जे समाजमां ओरां भूल्यांकन थाय ने अर्थने जोटी प्रतिष्ठा भजे, ए समाज से वर्षे पण...संस्कार रथापन करीने कांधपलु पराक्रम करवानो नथी. ए वाणी विलासमांथी नवरो थवानो नथी. अत्यरे ज आपणे तां वाणी विलास उत्तें हे ने काम केवुं ओहुं हे. छेल्ला विष युद्धमां भंगार थेलु जर्मनी आपणुने पैसा दारे ने वाणी विलास आपणे करीमे ?

आ दृष्टिए जेतां आपणु समाज जे जे दान मेणवे हे, एमां ज्यां ज्यां लावना नथी ने भीतुता, कायरता, भोडने नामनानो अंभना रही हे, ने एवी रीते जे कार्यकरा दान मेणवानी बडाशा दांडे हे ए तमाम अ-मानव हे, ए मानव नथी, ए पूतां हे पछी लवे ए दान एमणु संस्कार-कार्य भाटे मेणवुं होय, के शिक्षणुं कांध ने कांध काम करी नाभवा मेणवुं होय. आ अवातुं परिणाम आपणी सामाजिक नीतिभता उपर आव्युं हे. आपणे तां व्यक्तिने लवे कदाच नीति होय, समाजने तो कांध नीति नथी. कांध लेगा भणाने अनीतिना कार्यने, सेणमेणने, जोरीने, ओरां नक्कने, जोटी तंगीने

अगस्ती शक्ता नथी; मुंखर्थमां गोडाउनोमां त्रियु
हिस डृताण रहे हैं तज्जन हवावाणा, परहेशी भाल
वाणा, देशी दाखुवाणा ने धीवाणा पर्यु ए बहानुं
आगणा करीने भाव चणावे करी भूद्वाना ने पाणा
दान रेवाना.

अट्टें अर्ही जवर छेवे आ वातनी छे के,
आपणे अर्थे प्रधान सभाजने बदलवे धटे के.
वशभरपरा निर्भावोने सोंपाती स पति ए सरकारी
राहे ज निर्भावोने न सोंपता पाणी डाइ अना
सभाज कर्पर्थमां सोंपापात्र ज्वी लेझें, के आपणे
अभानी ज धण्णा सार्वजनिक दाम उभा करी शक्तीए.
तो ज आपणे त्यां नीतिभत्तानुं डाइ धोरण स्थपाशे.

असारे तो न पड़ायेला चोर वेपारी लाभेनां
दान करे ने सभाजमां अनी प्रतिष्ठा थायः खानगीमां
तो सौ ढान डरडता हेय छे, ‘लाभः’ एतो आमने
आम थयुः?

दान नेवी आपणी आध्यात्मिक शक्तिने आपणे
वेपारनी ने सोदानी ने शक्तिनी ने देखावनी चीज
भनावी दीधी छे. एतो अधोगतिनी दह रहेवाय. घरी
रीते तो संस्कारी दान लेनारनी साचा कार्यकरोये
एक वात स्पष्ट भूमी लेझें के, तमारँ नाम पर्यु
नहि आवे, ने तमारी नामना पर्यु नहि थाय. आ
शरते ज तमारामां तज्जवानी शक्ति हेय तो तज्जे ने
नहितर कांध नहिः;

पर्यु कार्यकरो पोते पर्यु संस्कारना कार्यमां
पर्या छतां भान तो संपत्तिने ज आपे छे. चित्रकृ
कणानुं प्रदर्शन हेय के, संगीत सभा हेय के,

साहित्य भिलन हेय के तत्त्वज्ञ-थर्थी हेय, प्रधान के
शहिया एमां डीहुं पर्यु सभजतो न हेय, पर्यु
उद्धारन तो एने वार्थे ज थाय?

एट्टें आपणा भाटे प्रक्ष तो आ छे; आटदी
क्रपथी वधती विद्या-विज्ञाननी आगेकुच्यां आपणे
ज्ञेयाई शक्तुं भरा? के पछी डेवण लेझेवा ‘दुरी’
ज रहेशु?

अत्यारे तो आपणी प्रज्ञमां जंगली आण्यु
ने अक्षउ समुद्रिवाणा वेहिया अने कुली जेवा संस्कार
कार्यकरो अने भूम भराडा पाडता-काम टापता
मन्त्रो, ए तथ वर्ग सिवाय थीने डाइ वर्ग ज
अस्तित्वमां रहेवाना संबंध नवी, जेहु शिक्षण्य
संस्कार, समुद्र अने शक्ति वधावां सत्ता तुलानो
वारसो भेण्यो हेय, ने तेथा प्रज्ञनुं भभीर नेम-
नामां सयवाई रहेवानी शक्यता! हेय एवो डार्ज ज
भार्ग आपणी आ अलिनव रयनामां अस्तित्व
धरावतो देखातो नवी.

आपणुने वाणी विलासनी छूट छे. पर्यु भावि
अंधकारभय छे. विलिन थेवेनां भाषुयेनां टेणां
ज छेवटे आपणे त्यां सर्वनाश लावरो. कारण् के
आपणे अर्थनेज अमान गण्याए छीवे, भानगीनी
नहि. भानव संस्कारस्तिने पर्यु नहि. विधाने,
विशाल के शक्तिने पर्यु नहिः. डेवण अर्थ ज प्रधान
छे, ने “सर्व गुणाः कांचनभाश्यन्ते” ए आपणु
सामाजिक नीतिभत्तानो पायो छे. एट्टें सर्वनाश
त्यांवी आवरो.

“विद्यालय”भानी सालार

तज्जवानी शक्ति

॥ मधु तिष्ठति जिह्वाये ॥

लेखक : अवेदलाल भी शोठ बा. ए.

जेनी लाला गङ्गुर छैय, जेनी गीरा आभूतमय
है। तेनी ऊब उपर भध जेवुं अमृत सदाय भाटे
वास करे छे, ऐम कडेवाय छे. प्रत्येक मान-
वीमे पोतानी लाला भीडी, भधुर, विवेक्युक्त
छतां मित राखवी लेइये. डार्छि पथ मानवीने
आपणे कडु वयनो कहीये तो तेथी ए मानवीने तो
पारावार फुःभ थाय ज छे. साथेसाथ आपणे कम-
भंधन करीये छीये.

काण्डा भाष्यसने 'काण्डियो' के 'भाडियो' कहीने
भोवावे तो तेने भाकुं लागे छे. विवेक चूँक्तने
आपणे भाताने 'पितानी पल्ली' ऐम कहीये तो
केल्युं अन्नुगतुं अने कडुं लागे? तेथी तो आप-
णामां कडेवाय छे के :-

काण्डाने काण्डो नव कहीये भाहां लागे वेणु
धमे रहीने पूऱ्याये केम गुमाव्यां नेणु

'तमारी आ आंभने केडी रीते धन पहेची,
भाई। ऐम पूऱ्याये तो ते काण्डो भाष्यस सावी
भिना सत्वर ज्ञानावी देशे.

परंतु सामान्य रीते आपणे भधुर भाला वाप-
र्याने अहले कडी लाला वापरीये छीये. सौर्था
भधुर लागती निंदाभेरीभां आपणे धणे समय
व्यनित करीये छीये. निंदारस एवो छे के तेमा
जेनी निंदा थती हेय तेना अवगुणे गायाना हेय
छे. तेमा भीकुं-भङ्गुं लखरावाभां आवे छे. वातेने
चगावयाभां आवे छे. ते हेय तेना करतां अनेकगण्यो
मारी चितरवाभां आवे छे. तेथी स्वाभाविकीते
ज ऐम कडु वयनो, कनिष्ठ उच्चारणो. आरवानाज
ऐनी ज निंदा अन्य कोई तेमना पोतानी (निंदा
इडुं) छे के :-

करनार अने सांखणनारना) करशे तो तेमने गमरो
भड़े? नहीं ज गमे. ते आपचने, केंद्र आपणी निंदा
करे ते न गमतुं हाततो आपणे भीजनी निंदा पश
करवा जोइये. कारण के तेमने पथु आपणी जेम न
ये वस्तु गमती नव्या. साचुं पूऱ्यातो आत्मजावे
सौ समान छ परंतु कर्मनुसार 'मुडे मुडे भात
रिंझा' हेय छे. प्रत्येक मानवीनी प्रकृति पृथक् पृथक्
हेय छे. ऐटले ज आपणे तो विसंगाहिताभांथा
संवाहिता शोधी काढवानी छे. कडुतामांयो भधुरता
भेणवानो छे.

ने भाष्यसो वातवातमां उडेराई जय छे
तेमा विवेक चूँक्तने ज झावे तेम भोवी नामे छे.
ते तेनी भाताने, तेना पिताने, पल्ली, भास, पुत्र,
पुत्री के ऐतने झावे तेम अने झावे तेवुं कही नामे
छे. मगज उत्तरनो काण्डु गुमाव्या पछी तेवुं कंध
धायुं ज रहेतुं नव्या. पछी तो तेमने पथु
पोताना अपूर्व भाटे पस्तावा थाय छे. परंतु तीर
धूरी गया पछी पाण्डुं वाणी शकाय भड़े? यूऱ्युं
गणी शकाय भड़े?

भेटवा भाटे ज जगतना भवापुरयो कहे छे के
वयन उच्चारतां पहेलां घूण विचार करो.

Give they ear to everyone but
thy tongue to few.

सांखणवुं सौतुं परंतु भेलवानो वारो आवे
लावे घूण विचार करीने अने तेणाने ओलवुं.
कारण के 'शब्द अल' छे. प्रत्येक वयननी किंभत
छे. कहेने शुभ वाक्यो, सुंदर सुभापिता, भधुर
गीरा तो अभूत्य छे. भेटवा भाटे भांडेतमा
इडुं छे के:-

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् ॥

अत्य ऐसो। परंतु प्रिय ऐसो। सत्य कहेवामां
इहुता न आवी जय तेनि तड़दारी राखवानी छे,
ले तेमां इहुता आवी जय तो सत्य समन्वयवानो
मूल हुतु रायी जय छे।

आपणे लाणीचे जीवे जगतना सधाणा भावा
पुरुषोनी भावा भीरी-भधुर हती। आपणा तीर्थंकर
भगवंतेथी भांडीने हळंद्वां थेवेला छतर धर्मना
महापुरुषो जेवा हे, युद्ध, द्यानांद सरस्वती, रमण
भद्रपिं, विवेकानंद, भद्रात्मा गांधी, नरसिंह महेता
अने भीरांना वयनोमां जेम सान सभर लघुं उे
तेम अमृत पण तेणा तेणाने बरेहुं छे। तेमना
वयनो साक्षात्के, तेमनां पुरतका वांगीचे त्यारे
आपणा हळद्वां प्रसन्नता जेवे हे, आपणे आत्मा
प्रकावित यहु जय छे।

अभारा पाडोशामां एक भधुरोभेन रहे छे। नाम
ऐवा ज ऐमना चुणु, ऐमनी भावा एटले साक्षरता
इहुता। ऐमना पति सरकारी अधिकारी छे। तेमने
तज्ज आणोडा छे।

भधुरोभेननी भीरी भावाथी डेक्काचे मालुसो।
प्रकावित थया छे। "कुहरत पण भधुरोभेननी डोर्छ
डोर्छ वार क्षपरी क्षेदी करे छे।

क्लक्ताथी भधुरोभेन एक डिमती थमोस सावेला।
तेमना पाडोशी नयनाभेन ते भागीने लक्ष गेवेला।
तेमने तेमां चा भरीने, तेमना भाई-भाऊी भाटे
स्टेशने लक्ष ज्यानी हती। तेमो ते लक्ष गया। चा-
पाणी पाठने भाई-भाऊीने तेमणे युश क्यों गाडी
आवी त्यारे नयनाभेन आदी थमोस तेना भोटा
भावाने आप्यो। नयनाभेन ज्यारे तेमना भाई-
भाऊीने 'आवज्ञे, आवज्ञे' इद्दी विद्वान आपी रखा
हता त्यारे तेमना नाना आपाचे भोटा भावा पासेथी
थमोस झूटन्यो। थमोसनो पहो तूटी गयो, अने

थमोस जमीन उपर पटकायो। तेवो ज तूटी गयो।
आ दृष्ट जोहने नयनाभेन मुंबवण्युमां भुक्ताई गया।
तेमो तेमना अने भावा उपर घूम कीषे भराया
अने तेमने तेमणे ऐ-चार थोड्यां पण लगावी
दृधी, ये छतां तूरेलो थमोस थोडा ज्याधाई जय हे
थमोसना दृढा लाठने, निराश वहने नयना भेण्णने
गुण आव्या। हे वे भधुरोभेनने मुख डेम यतावतु ?
तहन तेवा नझोर अने सुंदर थमोस तेमना आण-
डाचे तोडी नाख्यो। इतो। छतां काणजु क्षेत्रु फरीने,
पोते आवी भागवा लाव्या। ने काई डिमत भती होय,
ते आपणानी तैयारी भतावी।

बीज डोर्छ सामान्य खो छेत तो पोताने प्रिय
ऐवी सुंदर वस्तुने तोडी नाख्यार व्यक्तिने नीचेना
शहदो ज सुखावत :

'सच्यवातो न होय तो डिमती थमोस भागीने
लाई रा भाटे जता इशो ? दुनियामां तमारी जेवा
अधुज मालुसो ने डोर्छ चोज भागी आपवा न
जाहुण्या, आ ता मनपसंद चोजती डिमत हे के
ऐसानी ? भते ऐवा ने ऐवा थमोस भंगावी आगांगे,
समन्वया भोटाभेन ?'

आवी पण क्लक्ताय कुहरत वयनो संभागाव्या देत
परंतु आ तो भधुरोभेन तेमणे तो पोताने सहज
साध्य स्वरथता धारणु करीने नयनाभेनने क्षुः :

'तमे मुंबव छो शा भाटे ? भारा भाणडोयेज
ये थमोस तोडी नाख्यो छेत तो हुं झाने दरियाह
करवा जात ? मालुस जेवा मालुस हटाडानी जेम
हौटी-हौटी ज्यां छे त्यारे आपणे डोर्छने काई इदी
थमोस जीवे ? हुं भानीश के भाना भाणडोयेज
ते तोडी नाख्यो छे। तमे चिंता न करेश। तमारा
भाई अहवालिया पछी ज क्लक्ता ज्याना छे। ते
भीने लेता आवशी। ज्ये ज्ये पैसा आपवा आवता
नाली, हुं ते स्वीकारीश नाली। अने थमोस तूटी गयो
तेथी संकाय राखीने बीज चोज भागवा न आवी

तेवुं न कर्ता, मारी चीज मारा पाडेशीमेंने अप नहीं लागे तो थीज कोने लागें ?'

आ अभृतवाणु सांखणीने नयनाश्वरुने टाढ़क अध गध. तेमनी आंधमां आंसु आवी गया. तेओ भृतीमेनना वलथ अने तेमनी वाणी उपर आँहीन अध गया.

डाई पश्च क्षेत्रीमां आपणे जर्हने पूछपरउ करीमे के आ एओसना भोटा साहेब क्यारे भगें ? तारे ज्वाल शुं गें छे अपर छे ?

‘आ एोईमां एओसनो सभय लघेलो छे, वांची ल्यो ने ! डाईने वांचवुं नथी ने आप्यो हिवस पूछी पूछीने हम काही नापवो छे. आवा ने आवा आप्यो हिवस याल्या ज आवे छे.’

तो वली एक एओसना एक कामदार पासे हुं गयो. तेओ विनेकी अने भायाणु हेय तेवुं लाग्युं. तेमणे अने आवकायो, ऐसना भाई अने खुरस्ती आप्यो अने भारे भाटे पीवानुं पाणी भंगानुं. में तेमने जे जे सवालो पूछ्या तेना तेमणे एटला सुंदर, साचा छतां धीरजपूर्णक ज्वाल आप्या के हुं तो तेमनी उपर खुश थह गयो.

अभारा गाममां एक डोक्टर सरकारी हवाखाना-

आ भेडीकल एओइसर तरीके आवेला. सामान्यतः डोक्टरेनी भाषा भीडी नथी हेती. परंतु आ डोक्टर साहेब तेमां अपवाह्यप हता. तेओ अत्येक दृष्टि अधिष्ठिती तपासता. तेमने सधणी स्सनाओ विगत-वार आपता अने दृष्टि पूछे ते अओनो उत्तर तो एटला खांडा भीडा शम्भोमां आपता के दृष्टिनुं अधुं हुं तेथी ओां थह जतुं. तेमणे लेडानी खूब खूब चाहना भेणवी हती.

ऐ ज डोक्टर निवृत थधने अभारा गाममां आव्या अने तेमणे खानगी हवाखान शह डयुं तारे आप्या गाममां तेमनी एकटीस जौथी वधारे चालती हती.

भारा एक भित्र छे तेओ असंत भितलाथी अने भृतीभाषी छे. तेओने डोहानी साथे वेर बंधायुं नथी. में तेमने सवाल क्यों के सौना साथे तमे प्रेमलाल अने गैत्री जगनी शक्या छा तेनुं कारण्य शुं ? ज्वालमां तेमणे अने नीयेनो शेर झंकणाव्यो.

कडं हुं थगुता कोनी साथे ?

ज्यां कोई मुज फुरमन नथी,
महेष्यत लरी छे एटली दिवमां

के अहावतने त्यां स्थान नथी.



आडे आपवानुं छे

आवनगर खारगेट-हाउदलुनी हवेली घासे सलानुं एक चार माणनुं भडान आवेलुं छे. आ भडाननो ग्रीने-चोथो भाग आडे आपवानो छे. आडे राखवा धूच्छनार भाइओए नीयेना स्थगे मणवुं.

श्री ज्ञेन आत्मानंद सभा-आवनगर

પાપ અને પાપી

લેખક : મનસુભલાલ તા. મહેતા.

ચેટકરાજની પુત્રી શિવાહેના વગન ઉજાનૈનના મહાપ્રાતાંથી રાજની ચંદ્રઘોત સાથે થયા હતા. ચંદ્રઘોત કુર હેવા છતાં મહાપ્રાતાવરાળી અને મહાશક્તિશાળી રાજ હતો. શિવાહેના તેને સૌથી વધુ પ્રિય હતી અને તેથી જ તેવું સ્થાન બધી રાણીઓમાં પદરણી તરીકેનું હતું. ચંદ્રઘોતના ઉત્ત્રા શિવાહેના સાનિધ્યમાં શીનાનામાં પલટાઈ હતી. શિવાહેનું નેવું તેવસ્ત્રી રૂપ હતું તેવું જ તેવું શુદ્ધ ચારિન હતું અને નેવું શુદ્ધ ચારિન હતું તેવી જ તેના નિર્મણ શુદ્ધ હતી. રાજ્ય વહીવટમાં પણ ચંદ્રઘોત અને તેના મહામંત્રા સાથેની ચર્ચિઓ તે અગ્રલાગ દેતી અને ધ્યાન વાખત અટપરા કેયડા ઉકેલવામાં તેની શુદ્ધ માર્ગદર્શન રૂપ થઈ પડતી.

મહામંત્રી અવારનવાર શિવાહેના પરિચયમાં આવતો અને શિવાહેના રૂપ અને શુદ્ધિના ડારણે તેના પ્રત્યે તેવું આકર્ષણી થયું. શિવાહેની સાથે વાત કરતાં તેના મનમા ડાઈ અકૃષ્ણ લાવો. જગ્યા ગિહતા અને તેની કામવાસના પ્રદીપ થતી. તેની આવી તુચ્છ છલ્લાને તુસ ડરવા તણે શિવાહેની એક અંગત દારાને સાર્થી અને તેને સારી એવા રકમ આપી પોતે શિવાહેના પાછળ મુખ થઈ ગયો છે એવો સંદેશો મોકલાન્યો. દારી આમ તો શિવાહેની મફૂત અને સ્વભાવથી પરિચ્છિત હતી, પણ રાજ-મહાલયોમાં આવા આતની વહેવારા સ્વાભાવિક હોય છે એમ આની મોટી રૂમની લાલચે તેણું આતા ભીતાં મહામંત્રીના સંદેશાની વાત શિવાહેના મેઠ કરી. શિવાહેનીએ તેને ધ્વણાની સંખત ઠપડા આપ્યો અને મહામંત્રી સાથે ડાઈ પણ જાતના સંખંધ ન રાખવા સંખત તાકીદ આપ્યો.

દારી તરફથી કશા સમાચાર ન આપ્યા એટલે મહામંત્રીને લાગ્યું કે શિવાહેના પાસે આ વાત ડરવાની

દારીની હિમત જ નરી ચાલી હોય, નહિં તો હા-તાનો કોઈ જવાબ તો આવે ને !

એવામાં ચંદ્રઘોતને ઉજાનૈનની અહાર જવાનું અન્યું અને આ તકનો લાભ લઈ મહામંત્રી શિવાહેની પાસે ગયો. શિવાહેની પાસે ગોતાનું દુષ્ટ ધરાહા લાંદેર કરી એંધું : ‘કેટલાયે વખતથી હું તમારા સ્વરૂપો જેતો થયો છું અને હું તો માતું છું કે જગતની દરેક દરેક વ્યક્તિએ અચાનક-અનાયાસે પોતાને જે પ્રામ થાય તે મોગળી લેવું લેધાયે, કારણું કે તેમાં જ જીવનની સાર્થકતા છે. કી અને પુરૂષને મળેલાં રૂપ-લાવણ્ય, સૌન્દર્ય-માધુર્ય કાંઈ સંદકાળ ટકતાં નથી. વસંત અનુ પાછળ પાનખર આવે જ છે અને યુવાની પાછળ વૃદ્ધાવસ્થા પણ ચાલી જ આવતી હોય છે. ચંદ્રઘોત આ વર્તુ સમજે છે, તેથી જ અમરની માફક...’

શિવાહેનીએ મહામંત્રીને અધવચથી મોખતો રોકી જાંચા અને આકરા અવાજે એંધું : ‘ચૂપ રહો ! ઉજાનૈન જેવા મહારાજના મહામંત્રીને આવું જોખવું જાજરું નથી અને શોખતું પણ નથી. નાંત પાછળ પાનખર અનુ આવવાની છે, યુવાની પછી વૃદ્ધાવસ્થા આવવાની જ છે એનું જેને કાન હોય તે તો શાલ અને સંયમ વડે પોતાની યુવાનીનું રક્ષણ કરતો હોય છે.’

મહામંત્રીએ વિચાર્યું કે આતા બાબતમાં કોઈ પણ ક્ષણીય સહજ રીતે વર થતી નથી કારણું કે પ્રકૃતિ અને સ્વભાવે ક્ષી જાત માતુની હોય છે. તેને જીને એક એવો પણ અનુ દતો કે ખોની કામવાસના પુરૂષ ડરતાં અધિક પ્રમાણુમાં હોય છે, તેથી આતી બાબતમાં પુરૂષનો ચોક્કસ વિજય થાય છે. બધાજ કામી માણુસોની આની બામક માન્યતા હોય છે, કારણું કામનાથી વેરાપેલા માણુસને જે

એ પર તેની વાસનાયુક્ત દૃષ્ટિ હોય તે ખોમાં તે પોતાના મનમાં ભાવેનું જ પ્રતિબિંદિ જેતો હોય છે. જો અને પુરુપના હેઠળી રચનામાં ફરજ છે, પરન્તુ અંદરની ચીજ એક જ છે અને તેમેના આત્મા વચ્ચે ડાઈ બેહસાવ નથી; અનેના આત્માની શક્તિ સમાન છે. તથા, પુરુપને સભગ અને ખાને નિર્ણય માનવી એ એક જ જાતનું નથું ગાંડપણ છે, પણ કામી પુરુપને આ નક્કર સત્યનું જાન નથી હાનું માણુસ જેનું ચિંતન કર્યા છે તેનું ચિંતન તેમાં જ લહાહાર થઈ જાય છે, એમ શિવા-હેવાના યૌવન અને ઉપમાં પાગલ થયેદેં મહામંત્રી પોતાના ગાંડપણનું પ્રહર્ષન કરતાં આવ્યો: ‘મારે તો અહિં વારંવાર તમારી સભક્ષ આવનું જ પડે છે, એટલે આપણું વચ્ચે પ્રોત્થ થાય એમાં તમારે ધૂપાવણાનું કે શરમાવણાનું ડાઈ ડારણ નથી; આપણું પ્રોત્થે ડાઈ ત્રોણે જણી શકવાનું નથી.’

ખોને પોતાની પ્રશાંસા સાંભળવી બહુ ગમે છે અને એમ પ્રશાંસા કરતાર પર તે મોહી પડે છે, એવા અમૃત્વંક વળી મહામંત્રીએ કહ્યું: ‘તમારા ઇપ અને યૌવન, ગુણો અને શક્તિ તેમજ સૌનિર્દ્યતા અને મધુરતા પાછળ હું દેખો થયો છું, અને મારી પ્રદ્યાને તમે તુમ કરવામાં પાછા નહિં પડે એવી ખાતરી છે. હું આપની પાસેથી કથું દેવા નહિં પણ થઈ મારું સર્વદ્વય તમારા યરણું સમર્પવા આવ્યો છું.’

શિવાહેવાયે મહામંત્રી તરદ વહેદિષ્ટ કરી કટાક્ષ-અરી ભાવામાં કહ્યું: ‘અહો ! મહામંત્રીઓ ! ત્યારે આપ તો મારી સથે એમ કરવા આવ્યા છો ! તમને આ સ્થિતિમાં નેછ મને શુક્કદેવણી વાત યાદ આવી જાય છે. શુક્કદેવણે તપોભાગ કરવા મારું ઈન્દ્ર હેવલોકમંથી રંભાને તેની પાસે મોકલાવી. સમાધિમથી જાત થતાં રંભાને પોતાની સામે નૂય કરતાં નેર્સ શુક્કદેવણે તેને પૂછ્યું: ‘આપ ડાણ છો ? અને શા મારું અહિં પથાવી છો ?’ રંભાએ જવાબ આપતાં કહ્યું:

‘તપસ્વીઓ ! હું સ્વર્ગની અભારા રંભા હું અને સ્વર્ગની તમામ અપ્સરાઓમાં મારું સ્થાન મેખરે છે. સામાન્ય રીતે હેઠ બકારથી જેઠલો સુંદર અને શુરોભિત લાગે છે, તેટલો અદરથી દુર્ગધી લરડેલા અને કુરુપ હોય છે, પણ મને તો બકારનું અને અંદરનું એક સરખું ઇપ પ્રાપ્ત થયું છે. જેવું બકાર તેવું જ અંદર.’ રંભાએ વાત સાંભળી શુક્કદેવણ હસ્તા અને ભોલ્યા: ‘પણ આપનું આવા-ગમન અહિં શા કારણે થયું છે તે તો આપે ન ન કહું.’ રંભાએ રિમાત અને લંજલપૂર્વક કહ્યું: ‘ભોગી અને તપસ્વી વચ્ચેના બેંદ સર્જન જુનાં છે. એક ભોગ પાછળ દેલો થાય છે, ભીજો ભોગથી દૂર નાસે છે; જેઠલે મારે આપને રસ્પ રીતે સમન્વયનું જ રહ્યું હું આપના યરણોની દાસી થઈ રહેવા મારે આપની સમક્ષ આવી છું.’ શુક્કદેવણે રંભાને જવાબ આપતાં કહ્યું: ‘માતા ! જેનું બકારનું અને અંદરનું સ્વરસ્પ એક સરખું હોય, તેને યરણોની દાસી બનાવવાનું ન હોય, તેના ઇપે તો જન્મ દેવાનું હોય. ભીજો જન્મ દેવાનો હો તો તમારે તાં પુત્ર તરીકે જન્મ લઈશા, જેથી તમારી સુંદરતા અને વિશુદ્ધતાનો મને પણ કાઢ મળ્યો.’

શિવાહેવાયે વાત પૂરી કરી પછી મહામંત્રીને પૂછ્યું: ‘શુક્કદેવણનો જવાબ સાંભળી રંભા તો માનભાગ થઈ પાછો સ્વર્ગમાં ચાદી ગઈ, હવે કહે, આપને શું રહ્યું છે ?’

મહામંત્રીને થન્ય મનરક્ષ મળેલો જેઠલો થા મારાના આખરે શિવાહેવાયે કહ્યું: ‘તારીના એ-સ્વરસ્પ છે; એક માતુ સ્વરસ્પ અને બીજું પ્રેયસી સ્વરસ્પ એક સ્વરસ્પ માનવીને સિલાસન પર અને બીજું સ્વરસ્પ છીન્હી પર ચાલે છે. તમારે શળી પર ન ચલ્યું હોય તો આ જ પોણે અહિથા ચાલ્યા જાઓ.’

મહામંત્રીઓ વાલું મેહું કરી પોતાના નિવાસ-સ્થળે પાછા હ્યાં, પણ તેને ભય લાગ્યો કે આ વાત

यं अद्योत पासे जन्मानी अने परिषुम्भे भूसनी सज्ज
भृत्युमां ज परिषुम्भवानी. आवा क्षयने कारणे ते
भीमार पञ्चो, अने थोडा हिवसो आह यं अद्योत
जन्मानां पाण्डा इयो.

यं अद्योत अने शिवाहेवी बने साथे भीमार
महामंत्रीने ज्ञेवा तेना निवासस्थाने गया, त्यारे
पण्ठी भाष्यां सुधी शालवडे पोताना शरीरने ढाका
महामंत्री उंधी रक्षा कृता. अतुर शिवाहेवीने जाण्डी
शीघुं के महामंत्रो आण्डो वीची उंधवानो ढोऱ टी
पडी रक्षा छे, डारणे के राज अने राज्ञीने तेनुं
मेहुं अताववानो तेनामां हिंमत न कृती. यं अद्योत
त्यांथी अन्य कामे याती गयो अने शिवाहेवीने
महामंत्रीना जगत थया पठी ज महेलामां जशे
अमे इडी दधुं. शिवाहेवीने पठी महामंत्रीने
ढोणी कहुः : 'मेटालाई!' जगतमां भानवीने
ओडाह भूल भरेलो. विचार आनी जन्य तो तेथा
कांडी हमेश माटे ते शापित अनी रहेतो नथी अने
इक मानवी पश्चातपनी लहीमां तवाईने निर्भान-
निर्दीष अनी बाहार आवे तेवी ज परम इयाणु
परमतमानी धृच्छा होय छे. विज्ञार अने तिरस्कार
पापयुक्त विचार अने कार्य अन्ये जरूर होय, पण
पापी अन्ये तो अकाते ह्या अने अनुकंपा ज होवा
लोक्यें. भानवीने भानवेला कायदाएं अने धृश्वरी
अदालतना नियमे जिन लिन होय छे. भानव
रचित कायदाएं भाण्डस वधु अने वधु नपानट
भनेतो जन्य छे, त्यारे धृश्वरना कायदाएं नो हेतु तो
भानवने वधु पवित्र, सहायारी अने उत्तम भनाववानो

होय छे. तमारी अने भारी वर्षे थेवेती वातयोदय
कांध त्रीजु व्यक्ति ज्ञानवानी नथी, अने हवे ज्यारे
तमे पश्चातापनी लहीमां तवाई रक्षा छे, त्यारे अे
वात अन्यने कहेवानो कांध अर्थ पण्डु नथी.'

शिवाहेवीनी वात सांसारा महामंत्रीने पवांग-
भाष्यो उत्तरी तरत ज तेना चरणे पडी लीधां अने
अशुभीनी आंखामे कंठार्द खरे कहुः : 'भाता !
मने जन्म आपनारी भाताएं आ पृथी पर भने
दाववामां मद्द डरी, पण्डु तमे तो भने अधःपतनना
भारे ज्ञा अटकानी नवुं अवन आप्युं छे. तमारी
आवो उपकार हुं कांध जन्मे पाणु नडिं भूती राहुः'

शिवाहेवीने तेने उबा करी कहुः : 'मेटालाई !
भाण्डुसनी झीर्ता अने शाला कांध दिवस तेना हाये
भूत ज न थाय तेमां नथी, पण्डु हरेक वर्षे ज्यारे
भूल थाय त्यारे पश्चातप दारा भूतने सुधारी अनी
भूल न ज थवा पामे अनी रीते सावयेनीपूर्वक
शृव्यामां छे.' महामंत्रीना शृव्यननुं परिवर्तन थयुं
अने तेनुं शृव्य दोपरलित अनी गयुं.

पोताना भन अने धनियोने शांत करवानी कणा
जानीयो जाणे छे. पण्डु महामानी तो अन्यने पण्डु
तेना भन अने धनियोने शांत करवानी कणा शीखवे
छे, अने जगतमां आने भाव जानीयोनी नहिं
पण्डु शिवाहेवी नंवा भाण्डानीयोनी जरूर छे.

धतिहास कडे छे के लगवान महावीर पासे
दीक्षा लई शिवाहेवी भातानो ज्यव अे ज भवमां
मुक्ति धामगां संचयें.



જીવનનો હિસાબ

પૂ. કેદારનાથજી

માનવજીવન અમૃત્ય છે. એ વર્થ ન જય માટે એનો સાવધાનીપૂર્વક હિસાબ રાખવો જોઈએ. જે વેપારી હિસાબ રાખે છે, અને સાવધાનીથી પોતાનો વ્યવહાર ચલાવે છે એને કહિ ખોટ ખોટ નથી. એજ પ્રમાણે જે લોકો પોતાના જીવનનો હિસાબ રાખે છે, તેઓ પોતાના જીવનને ઉત્તે અને સંકળ બનાવે છે. જીવનને ઉત્તે બનાવવા માટે એનો હિસાબ રાખવો જરૂરી છે. તેમજ આપણે ડેવું જીવન બનાવવું છે એનો આદર્શ પણ દાખિ સમક્ષ રાખવો જરૂરી છે. આપણી સામે ડોાં ઉત્ત્ય આદર્શ હસે અને એ આદર્શ સિદ્ધ કરવા માટે આપણે પ્રયત્નશીલ હજું તો નિશ્ચય આપણે એ આદર્શને પહોંચી જાઈએ. આદર્શ સામે રાખ્યા વગર જીવન વીતતું રહે એબાળકના લાથમાં પેન્સિલ હોય તે તે લીટા પાડ્યા કરે એના જેવું છે. બાળકની કિયા પાછળા યોજના ન હોય તો એ નિર્ણયક લીટા કરશે. પરંતુ એની સામે ડોાં ચિત્ર હોય અને એ ચિત્ર પાડાનો પ્રયત્ન કરતો હોય તો સંલઘ છે કે બાળક ચિત્ર હોરવામાં સંકળ થાય ખરો. એ જ રીતે આપણે એક આદર્શ નક્કી કરી એનું ચિત્ર નજર સામે રાખવું જોઈએ. અને એ ચિત્ર પ્રમાણે આપણું જીવન અની રહ્યું છે કે નહિ એ જે તપાસતા રહીએ તો અવસ્થ છે કે આપણે આગળ વધી શકીએ છીએ. એ માટે એ આવસ્યક છે કે આપણે આપણી વધી વૃત્તિએ ઉપર ધ્યાન આપવું જોઈએ. એમાંથી જે અયોગ હોય તેનો તાગ કરી સારી વૃત્તિએને ભાવ-

નામાં પરિણુત કરી એને શુદ્ધ બનાવી વિવેકપૂર્વક એનો કાર્યમાં ઉપયોગ કરવો જોઈએ. આપણે આપણી ખુદ્દ, મન અને કર્મનું નિરી-કાણ કરી એને સુધારવા મ્યાસ કરીએ તો જ આપણું જીવન સુધરી શકે છે. સ્ત્રતાં પહેલાં આપણે આપણા રોજનો હિસાબ રાખવો જોઈએ. જે કાઈ અતુચિત થઈ ગયું હોય, જે કાઈ દોષ થતો હોય, એ સર્વ માટે ગ્રાયાશીલ ફરજું જોઈએ. જેમ વેપારી સ્ત્રતાં પહેલાં પોતાનો હિસાબ રાખે છે તેમ જ આપણે સ્ત્રતાં પહેલાં આપણી દારા થયેલા તમામ કિયા આપણા આદર્શ સાથે સુમેળ રાખે છે કે નહિ તે તપારી લેવું જોઈએ. વૃત્તિએ અનુસાર જીવવું ચોગ નથી. કુપણ તે ચોગ છે કે નહિ તે તપાસી સારી વૃત્તિએ અનુસાર જીવન વિતાવવામાં કલ્યાણ છે. એને માટે મનને શુદ્ધ, સ્થિર અને સ્વાધીન રાખવું આવશ્યક છે, તો જ આપણે ઉત્તિ કરી શકોશું.

આપણે ગમે તેઠલા સારા વિચાર કરીએ કે ઉત્તમ ઉપદેશ સાંભળોએ, અથવા પવિત્ર અંશો વાંચીએ, પરંતુ સારા વિચારોને જીવનમાં ઉત્તાર્થી વિના, એ પ્રમાણેનું આચરણ કર્યો વગર આપણી ઉત્તતિ નથી થઈ શકતી. આપણે ડોાં સારા કામમાં બહુ મોટું દાન કરી દઈએ તેથી આપણે એજ નથી અની જતા. આપણી શૈક્ષતાનો આધાર તો એ આપણું દૈનિક જીવન, આપણું આચરણ, આપણું આચરણ ઉત્તમ છે કે નહિ ! દાન, સમાજ સૈવા, વગેરે સારાં હાચો છે. પરંતુ જીવનની શૈક્ષતા

परिपूर्णैश्च सहगुणी अनवानां छ. धर्म आम तो दैरेक व्यक्ति जाणे छे परंतु आचार सर्व नथी करी शकता. ऐसी मात्र धर्म जाणवो ते सारा विचार करवा एटलुं ज धर्माप्त नथी. परंतु ऐनो आचार करवाथी ज श्रेष्ठता आप्त थाय छे.

सुविचारै प्रभाषे आचरण थाय ए भट्ट व्यक्तिमां सुसंस्कार होवा जड़री छे. संस्कारो द्वारा सहगुणो प्रवेशे छे. अने सहगुणो प्रभाषे वारंवार आचरण थवाथी ए स्वलाव अनी जय छे. सहगुण ज्यारे स्वलाव अनी जय छे तारे अहंकार नष्ट थर्ह जय छे. सहगुणी आचरणुं जे कठाय आप्णने अलिमान होय तो समज्वुं लोध्याए के सहगुण आप्णे स्वलाव नथी अनी गयो.

वासणने क्वाँ चीजाथी पूर्ण भरी होवामां आवे तो एमां भीज चीज रही शकती नथी. ए ज रीते हृष्य सहगुणाथी परिपूर्ण होय तो एमां अलिमान रही शक्तुं नथी. आप्णे भीजाथी ओष्ठ छीजे, चढियाता छीजे एम लागे तां सुधी अलिमान छे अने ते सर्वांगीण विकासमां आधुक छे.

अहंकारथी साचो विकास अतो नथी. पाणी नेह्याए तो नम्बुं पहरो. नम्या वगर पाणी नथी भणी शक्तु. सारो उपदेश पणु नम्र अन्या वगर अहंकार नथी थर्ह शकतो. ज्ञेने पोतानुं ज्ञवन शुक्क अने सरणी अनावनुं छे ऐसे अहंकार छोडी नम्र अन्वनुं ज धर्म.

नम्र अनवा भट्ट आप्णे अंतर्मुख अन्वनुं नेह्याए. आप्णे विचारणुं लोध्याए के संसारमां दुःख

डेम छे ? आप्णे अशुद्ध छीजो, आप्णुमां होय छे. आप्णा होपेने लिखे आप्णे दुःखी अनीजे छीजे अने भीजने दुःखी अनावीजे छीजे. आप्णुमां अशुद्ध डे होय होय तो ज आप्णुथी अशुद्ध उच्चारण थर्ह जय. जे आप्णुमां प्रेम होय, विद्यास होय. तो आप्णा मोठाभांधी सारा शण्हो ज नीडगरे. एटले अंतर्मुख अनीते आप्णा होपे. ज्ञेतां शीघ्रवुं लोध्याए. भीजना होप ज्ञेवाथी क्वाँ लाल नहि थाय. आप्णे भीजने छेतरी शक्ताए पणु आप्णी जातने आप्णे नहि छेतरी शक्ताए. अंतर्मुखता एक अरीसे छे तेमां आप्णे ज्ञेवा छीजे तेवुं ज आप्णुं प्रतिबिंध पडे छे. अरीसामां मेहुं ज्ञेतां जे मोठा पर डैर्ह इध पड्यो होय तो ते हेडाता दूर करी शक्ताय छे. नामसमरणु, संध्या, सामाधिक, नमाज, मार्त्तना, तथा ध्यान-धारणा वगेरे पाणी अंतर्मुख अनवानो ज आशय छे. तेथी हमेशां अंतर्मुख अनी आप्णी उपर नजर राखवानी टेव पाणी, तो आप्णा होपे दूर थर्ह शक्तो.

अन्येक व्यक्ति आपरे सुख धर्छे छे. क्वाँ दुःख उच्छवुं नथी, परंतु सुख धर्छवा छतां अने सुखमाप्तिना अथतो करवा छतां वधारे प्रभाषुमां दुःखी ज लोको भगे छे. तेव्हा हमेशां पोतानां दुःखनां रोहणां रडे छे. जे क्वाँ दुःखी पोतानुं दुःख भीजने कडेवा जय छे तो ते सांबणनार पोतानुं ज दुःख रुखा लागे छे. एटले संत कनिजे कह्युं छे के, ‘सुभिया हुंदेत मैं’, हिर सुभिया भिलत न क्वाँ, जिसके आगे दुःख कहुं सो. वही छाँ रोय.’ ऐसी आप्णुमां भीजना दुःखनी वात सांबणवानी धीरज अने सहानुभूति पणु नेह्याए.

लुप्तनो छिसाख

हुःअनी वात क्लेवाथी हुःभानुं भन छकुं थध जय
छे अने सहानुशूति प्रमट करवाथी ए वहेंचाह जय
छे. अने जे आपणा डाथमां हेय तो हुःभानुं
हुःअ च्योषुं करवामां भद्दह करवी जोहुओ. जे
आपणा पर हुःअ आवी पडे अने डाई ए दूर
करे तो ते व्यक्ति आपणुने प्रिय लागे छे. भीजने
प्रिय थवा भाटे भीजना हुःअने दूर करवुं जोहुओ.

आपणे आ रीते आपणुं उवन ऐष अनानु
हेय तो एवों ज उवननो आदर्श दृष्टि
सन्मुख राखवे जोहुओ अने ए आदर्श अनुसार
चालवानो निक्षय करवो जोहुओ. ज्या सुधी एवो
दृष्टि कंक्षय आपणे नहि करीओ तां सुधी सहगुणी
न अनी शक्ती. जे होपरहिन, सहगुणी अने
संकारी अननुं हेय तो ए आदर्श सामे राखी
सहगुणो डगववा जोहुओ. उवनने उवन अनाववा
अनेक सहगुणानी जडर छे. एमां मुख्य छ विवेक,
संयम, सावधानी, पुरुषार्थ अने जगृति. विवेक न
हेय तो सारा अराधनो निषुधि आपणे नहि

करी शक्ती. विवेक हेय पछु संयम न हेय
तो पछु नही यादे. कारण संयम न हेय
तो सारा अराधनो जेह जाश्वा छतां ए
अनुसार वर्ती न शक्ती. अने संयम पछु
हेय पछु सावधानी न हेय तो पछु गङ्कलत थवा
संख्य छे. अने सावधानी, संयम अने विवेक त्रये
हेय परंतु पुरुषार्थ नदी तो कशुं ज नदी. आ
वर्ती वात थवा छतां पछु जे जगृति न हेय तो
काम नहि यादे. उवननो जगृतिनुं आव्यांत भक्त्व
छे. जगृत रहेवाथी ज भूत समजय छे. जे भनो-
भूमिका सक्षम हरो अने विवेक हरो तो होय जास्तां
वार नहि लागे. स्वच्छ कपडां पहेरवानी जेते
आहत हेय छ ए मेलां कपडां जेतां ज ओणभी
जय छे, अने गंदां कपडां सारां ज नहि लागे.
ए ज रीते जगृत भनुख्यने भूत शोधनी मुक्तेल
नहि लागे. आज्ञाथी निक्षय करो के आ आदर्श
प्रमाणे उवन अनावीक्ष.

(जनसंदेशमांथी साकार) अनु : उलावतीथेन वोरा



भास विज्ञापित

आ सभाना ज्ञानभातामां सारी एवी तूट छ. आ भाटे दान आपवा उदार दाताएने
विनांति करवामां आवे छ.



जैन समाचार

जुरियना द्वानेलींग युनिवर्सिटीना सम्बोदा, डॉ. गुरसतव शैथली आगेवानी हेठल, भारतीय संस्कृतिना, अने खास करीने, जैन धर्मना वधु अध्ययन माटे गઈ ता. २२-१-६६; ना रैज लारतमां आव्या छ अने ते ज निवसे मुंबईमां श्री भद्रानीर जैन विवालयनी तेओआे मुलाकात लीडी हती.

डॉ. गुरसतव राथ 'श्री शांतिनाथ चरित्र' पर संशोधन करी भाष्येच. डी (Ph. D.) थ्या ऐ. तेओ. विभेटन, प्राकृत अने अर्धभागधीना एक निष्णात विद्वान् छे अने तेमनां मंतव्ये आधारभूत गण्याप छे तेओ. संस्कृत अने हिंदीमां वातचीत सरणीती इरी शके छे परंतु आपणे त्यां आवा विद्वानोनी निःसासावृति सतोषी शके तेवा विद्वानोनी भोटी ऐट छे.

गानना प्रयार द्वारा जैन धर्मना उंडा तत्त्वग्रान्तुं इलक जनसमूह सुधी पहेंचाडी शके ऐतीडाह निःस्वार्थ संस्था होय तो ते साधुसमाज ज छे आ.श्री विजयधर्मसूखीश्वरज्ञ, आ. श्री विजयानं-द्व्यर्षीश्वरज्ञ (आत्मारामज्ञ भद्राराज), आ. श्री विजयवल्लभसूखीश्वरज्ञ ये आगली पेढीना. हुरंधर खुगदृष्ट्याच्या हता. तेमनी पूर्णी आने तेमनी होरेणामां गण्य शकाय तेवा आयायी के अन्य निष्णातो आपणी पासे पूरता प्रभालुमां नयी. आवा उच्च श्रेष्ठीना निष्णातोने तैयार करवा माटे अने तेमने ग्रेत्साहन आपवा माटे श्री जैन संघे व्यवस्था करवानो समय पाडा गयो छे अभ अभने लागे छे.

श्री जैन धार्मिक शिक्षण सोसायटी

भारतभरमां जैन तत्त्वग्रान्ता प्रयारद्वारा आधुनिक अज्ञना चारित्र धउतरना उद्देश्यी स्थापायेल श्री जैन धार्मिक शिक्षण सोसायटी मुंबईनी प्रथम वार्षिक धार्मिक छानामी परीक्षा ता. १६ भी जन्यु-आरी १९६६ ना रविवारे श्री शकुन्तला कानितकाल घर्षणवाल जैन गर्ल्स लाइसेन्समां लेवामां आवी हती. जेमां मुंबई तथा परांगानी पाहाथाणाना घोरण्य १ था ४ सुधीना कुह्ये ७१८ बाणडो तथा आणेयाचे भाग लीधी हतो. सोसायटी नदेश्यी अद्यार गामनां डेटलांड केंद्रोमां पाणु परीक्षा लेवाय छे.

आ. प्रसंगे संस्थाना भ्रमुभशी पोपटवाल भीभायं-ह झेरी, शेठशी भोगीलाल लहेडयं-ह झेरी, संस्थाना मंत्रीशी पोपटवाल डेशवलाल होशी विगोरे होकेशारोये हाजरी आणी अंगत निरीक्षणु करुं छतुं.

भोपारना समये परीक्षार्थीआने-निरीक्षको तथा आमंत्रित सहअहस्योने अद्याहर आपवामां आव्यो हतो.

શ્રી પ્રભુદાસભાઈનું સન્માન

મુખ્યમાં શ્રી વૈધારી વિશા શ્રામણી જાતિનો એક સમારંભ તા. ૨૩-૧-૬૬ ના રોજ શ્રી પ્રભુદાસ ગાંડાભાઈનું સન્માન કરવા માટે શેડ્ચી આગળ જવેશભાઈના પ્રમુખપદ થોળવામાં આવ્યો હતો અને પ્રસંગે સર્વશ્રી રહિતલાલ દીપચંદ, હારાલાલ જુઠાલાલ, છોટાલાલ ગીરધર, વનમાળિદાસ પ્રાગળ નાનચંદ તારાચંદ તથા અન્ય વક્તાઓએ પ્રસંગેચિત્ત પ્રવચનો કર્યાં હતાં. આપણી સલાતા ઉપરમુખ શ્રી ઇશોહચંદ જવેશભાઈએ પણ શ્રી પ્રભુદાસભાઈની જાહેર સેવાઓને અંજલિ આપતાં કર્યું હતું કે “તેમણે ડાઈપણું જાતને હોદો ધરાવા સિવાય મૂડપણે ગાતિથંધુએની અનેક રીતે સેવા કરી છે, આપણા ગ્રાંતમાંથી આવતા બંધુઓને આશ્રય અપાવવામાં, બાધથી અલિકૃત થયેલાને ડેઝટર અને દ્વાત્ની સલામ કરવવામાં, મધ્યમ વર્ગને ગુપ્ત દાન કરવા-કરાવવામાં અનેક વર્ષોથી સેવા કરતા આવ્યા છે. તેઓ કારણ પ્રકૃતિના છે અને સેવા કર્યાં અલિમાન તેમનામાં નથી. આવા નિરલિમાની સેવકાર્ય કરનારા આપણી જાતિમાં મળવા સુષ્કેલ છે. તેઓ તણાન પાસે આવેલા ભાગવળ ગામના રહીથ છે. સુખદૃઢ તેમણે જેથાં છે એટલે મધ્યમ વર્ગનાં સુખદૃઢ તેઓ પરખી શકે છે. તેઓ નાન અને શાંત પ્રકૃતિના છે તેમજ અડુ સાથે હોળણા રહ્યા છે. તેમનું સન્માન કરવું તે જાતિની ઇરજ છે. આજે પ્રભુદાસભાઈ એક તરફથી સન્માન લે છે અને બીજી તરફથી તેમને અર્પણ કરવામાં આવતી સન્માનથીદામાં પોતાની તરફથી ઉમેરા કરીને તે સથળા રકમ તાતિલાંધુએના હિતમાં વાપરવા માટે જાતિને પરત કરે છે અને એ રીતે પોતાના જાતિથંધુએને સન્માનિત કરે છે તે આપણે સૌંદર્ય ગર્વ લેવા જેવું છે.”

આ સમારંભમાં શ્રી પ્રભુદાસભાઈને જાતિ તરફથી રૂ. ૩૭૫૫૫ની થેલી અર્પણ કરવામાં આવી હતી, એથી તેમણે રૂ. ૨૫૦૦ પોતા તરફથી ઉમેરી રૂ. ૪૦૦૫રૂ ની રકમ જાતિથંધુએના હિતમાં વાપરવા માટે જાતિને સુપરત કરી હતી.

—————

અમૃતસરમાં તા. ૧૩-૧-૬૬ના રોજ સંકાંતિના પ્રસંગે ભાડારગામથી સેંકડો ભાઈંદેનો આચાર્યશ્રી અમૃતસરીશ્વરજી મહાંજના દર્શનથોર્યે પથારેલ. તેમના માટે ચા નારતા ભોજનનો પ્રયાંધ થયો હતો, અને કાર્યક્રમમાં દેશના લાડીલા નેતા વડાપ્રવાન શ્રી શાસ્ત્રીજીના આત્માનો શાંતિ અર્થે અદ્ઘાંજલા અર્પવામાં આવેલ. સંકાંતિની સલા બાદ ડેટલાંડ ક્ષત્રીઓએ અભક્ષ્ય ત્યાગ વિગેરે નિયમ મહણ કર્યી હતા. શ્રી આત્માનંદ કૈન લાઈએરી ભવનમાં સાધીનું પુણ્યશ્રીજીની શિષ્યા સાધીનું પ્રમેદાશીજીની વડી દીકા આચાર્યશ્રીના હતે થઈ હતી.



“આત્માનંદ પ્રકાશ”નો આવતો અંક

“આત્માનંદ પ્રકાશ”નો આવતો અંક હવે ઝાગણુ-ચૈત્રના સંસુક્ત અંક રૂપે
“મહાવીર જ્યંતિ” ખાસ અંક તરીકે પ્રગટ કરવામાં આવશે.

આપ જણો છો કે આજનો મૌંધવારીને અંગે આ માસિક ખોટમાં ચાહે છે, એમ છતાં જ્ઞાનપ્રચારની શુદ્ધ દૃષ્ટિ અને એને દરેક રીતે વધુ સમુદ્ધ કરવાની ભાવનાથી અમો
માસિકના વિકાસ માટે અમારાથી બનતું કરી રહ્યા છીએ અને આ દૃષ્ટિએ જ અમોએ
આવતો અંક “મહાવીર જ્યંતિ” અંક તરીકે પ્રગટ કરી બને તેટલી સારી રસસામગ્રી
તેમાં પીરસવા માગીએ છીએ અને તે બને તેટલો દળદાર કરવાની પણ અમારી ભાવના
છે. તો વિદ્ધાન આચાર્યો, મુનિમહારાજો અને અન્ય ગૃહસ્થોને વિનતિ કે તેઓ પોતાના
દેખો આ માસની આખર સુધીમાં બને તેટલાં વેલાસર અમને મોકલી આલારી કરે.

માસિકની ખોટને પહેંચી વળવા મારે ચોથ્ય જહેર અખરો સ્વીકારવાનો અમોએ
નિષ્ઠુંધ કરો છે અને તે અંગે અમોને ચોથ્ય સહ્યકાર પણ મધ્યે છે.

વ્યાપારી પેઢીએ અને સાહિત્ય-શિક્ષણ સંસ્થાઓને અમારી વિનતિ છે કે મહાવીર
જ્યંતિ અંકમાં તેઓ પોતાની જહેરાત મોકલી જ્ઞાનપ્રચારના અમારી આ કાર્યમાં અનતો
સહ્યકાર આપી અમોને આલારી કરે.

આ માસિકમાં અધ્યાત્મી જહેર અખરનો ચોથ્ય બહાંડા ભળી રહે છે તેની અજી આપને
આની આપીએ છીએ.

—: જહેરાતના દર :—

પેજ આખું, શા. ૩૦ : પેજ અધું, શા. ૧૮

ટાઇટલ પેજ ત્રીજું શા. ૪૦ : ટાઇટલ પેજ ચોથું શા. ૫૦

આપના લેખ અગર જહેરાત તરત મોકલી આલારી કરશો.

શ્રી જૈન આત્માનંદ પ્રકાશ : ભાવનગર

શાપરીઆ

બનાવનાર

બનાવનાર

ભારતુસ

લાઇફ એટસ

૮૩૩

ડ્રેજસ્

પેસેન્જર સ્ટીમસ્

પોન્ડિન્સ

મુરીંગ બ્યાયઝ

બ્યાયન્ટ એપરેટ્સ વિગેર્સ

રોલીંગ શાટસ્

ક્રાયર પ્રૂફ ડાસ્

રોડ રોલસ્

મહીલ બેશેજ

રેફિયુઝ હેન્ડ કાર્ટ્સ

પેલ ફેન્સીંગ

લેડ-ચુલાઈટ (લેંગુલ)

મેનેટીક સેપરેટર્સ વિગેર્સ

શાપરીઆ ડેંડ એન્ડ સ્ટોલ કું ગ્રા. લીમીટેડ

—: શીપ ફીડર્સ અને એન્ટ્રન્નીયર્સ :—

ચેરમેન : શ્રી માણ્યુકલાલ ચુનીલાલ શાહ

મેનેટીક હિરેકટર્સ : શ્રી મોહનલાલ ભાણુલ શાપરીઆ

શ્રી અમૃતલાલ ભાણુલ શાપરીઆ

એન્ટર્પ્રાઇસ અને શીપયાર્ડ
શીનર્સ ફેલ્ડ રોડ,
મુંબઈ નં. ૧૫ (ડી.ડી.)
દ્રાન નં. ૬૦૦૭૧/૭૨
પ્રાથમિક : “શાપરીઆ” શ્રીવરી, મુંબઈ

એન્ટ્રન્નીયર્સિંગ વકર્સ અને એન્ટ્રન્નીયર્સ
પેલ રોડ, કોસ લેન
મુંબઈ નં. ૧૨ (ડી.ડી.)
દ્રાન નં. ૭૦૮૦૮
પ્રાથમિક : “શાપરીઆ” પેલ, મુંબઈ

રજુસ્ટ્રેશન એઓફ ન્યુઅપેપર્સ (સેન્ટ્રલ) ડાલ્સ ૧૮૫૬ અન્વયે "આત્માનંદ
પ્રકાશ" સંખ્યામાં નીચેની વિગતો પ્રગટ કરવામાં આવે છે.

૧. પ્રસિદ્ધસ્થળ : ખારોટ, ભાવનગર

૨. પ્રસિદ્ધ કુમ : દરેક અંગ્રેજ મહિનાની સેણમી તારીખ

૩. સુદ્રકનું નામ : અનંતરાય હરિલાલ શેડ

કૃયા દેશના : ભારતીય

ઠેકાણું : આનંદ પ્રિન્ટિંગ પ્રેસ, ભાવનગર

૪. પ્રકાશકનું નામ : શ્રી જૈન આત્માનંદ સભાની વતી,
ખીમચંદ ચાંપશી શાહ, ભાવનગર.

કૃયા દેશના : ભારતીય

ઠેકાણું : શ્રી જૈન આત્માનંદ સભા, ખારોટ ભાવનગર

૫. તંત્રી મંડળ : શ્રી ખીમચંદ ચાંપશી શાહ, શ્રી હરિલાલ દેવચંદ શેડ,
શ્રી કુંદનલાલ કાનળ શાહ, શ્રી અનંતરાય જાહેરશ્રી શાહ,
શ્રી અનંતરાય હરિલાલ શેડ

કૃયા દેશના : ભારતીય

ઠેકાણું : શ્રી જૈન આત્માનંદ સભા, ભાવનગર

૬. સામાયિકના માલિકનું નામ : શ્રી જૈન આત્માનંદ સભા, ભાવનગર

આથી અમો જહેર કરીએ છીએ કે ઉપર આપેલી વિગતો
અભાવી જાણ અને ભાન્યતા સુજાપ બારાબર છે. તા. ૧-૨-૧૬૬૬

ખીમચંદ ચાંપશી શાહ
હરિલાલ દેવચંદ શેડ
કુંદનલાલ કાનળ શાહ
અનંતરાય જાહેરશ્રી શાહ
અનંતરાય હરિલાલ શેડ

શ્રી જૈન આત્માનંદ સભા-ભાવનગર

આસ અગત્યની વિનંતી

આ સલા તરફથી આજસુધીમાં માગધી, સંસ્કૃત, શુજરાતી, હિન્દીશ તથા હિન્દી ભાષામાં લગભગ બસે પુસ્તકો પ્રગટ કરવામાં આવ્યા છે. તેમાંથી મોટા ભાગના થયો આજે સ્ટોકમાં નથી, માત્ર સાડથી પણ ઓછા થયો સ્ટોકમાં છે અને તેમાં પણ કેટલાક થયોની તો બહુ જ થોડી નકલો સ્ટોકમાં છે. હાલ ને થયો સ્ટોકમાં છે તેમાંના સંસ્કૃત વિભાગની અગત્યની યાદી નીચે આપવામાં આવેલ છે. આ પ્રકાશનો ખૂબ જ ઉપયોગી અને તરત વસાવી લેવાં જેવાં છે. તે નેઓએ તે વસાવેલ ન હોય, તે પોતાના જ્ઞાન-ભારમાં તરત વસાવી વ્યે તેવી અમારી ખાસ વિનંતી છે. નીચે હથ્યાવેલ કીંમતે થયું સ્ટોકમાં હુશે ત્યાં સુધી આપવામાં આવશે અને ખાસ સગવડ તરીકે તેમાં સાડાબાર ટકા કમિશન કાપ્ય આપવામાં આવશે.

१ वसुदेव हिन्दी : (द्वितीय अंश)	१०-००	५ त्रिषष्ठी पर्व भा. १लो. (भूग संस्कृत) ६-००
२ आ. देवेन्द्रसूरिकृत टीकायुक्त कर्मप्रथं		
भा. रजा (पाच अने ७)	६-००	६ " भा. रजा (") ८-००
३ जैनमेघदूत	२-००	७ " (प्रताक्षर) १०-००
४ प्रकरण संग्रह (प्रताक्षर)		आ. श्री विजयदर्श नसूरिकृत टीकायुक्त
(ज्ञेमां सिद्धं दुर्भकरणश्च भूग, तत्त्वार्थाधिगम भूत भूग, युणुस्थानक्तमारोह भूग अ.)	०-५०	८ सम्मतितर्क महार्णवतारिका..... १५-००
		९ तत्त्वार्थाधिगमसूत्रम्..... १५-००

લખો :— શ્રી જૈન આત્માનંદ સભા : બાવનગર

प्रकाशक : भीमर्यादा चांपशी शाह, श्री लैन आत्मानंद सभा वती
मुद्रक : अनंतराय दिव्यालय रोड, आनंद प्रिण्टिंग प्रेस, रुद्रेश्वर रोड-सावनगढ़.